पाठ 6 **नवम्बर 3-9**

एकता की छवि

सब्त अपराह्न **नवम्बर 3**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : 1पत० 2: 9; निर्ग० 19: 5-6; इफि० 2: 19-22; 1कुरि० 3: 16-17; 1कुरि० 12: 12-26; यूहन्ना 10: 1-11; भजन० 23.

याद वचन: *"क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है" (1कुरि० 12: 12)।*

जैसा कि किसी ने भी बाईबल अध्ययन किया है जानता है, यह छवियों और संकेतों से भरा पड़ा है जो स्वयं उन छवियों और संकेतों से बढ़कर हक़ीकत को इशारा करते हैं। उदाहरण के लिये सम्पूर्ण बाईबलीय बलिदान विधि का सार वाकई में यीशु और उद्धार की पूर्ण योजना को संकेत करता है।

बहुत-सी अन्य छवियों का इस्तेमाल बाईबल में किया गया है, और कभी-कभी बहुत ही मूल तत्वों- पानी, आग, और हवा का भी प्रयोग हुआ है। प्रसंग पर निर्भर करते हुए ये आत्मिक और धर्मविज्ञान संबंधी सच्चाइयों की तस्वीर हैं। उदाहरण के लिये जब यीशु ने कहा, "हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है" (यूहन्ना 3: 8), हवा पवित्र आत्मा को संकेत करता है।

बाईबल एकता के प्रकार को वर्णन करने के लिये असंख्य तस्वीरों का इस्तेमाल करती है जिसे हम कलीसिया में पाते हैं। इस एकता को परमेश्वर हमें संसार के सामने प्रकट करने के लिये आह्वान करता है। कोई भी व्यक्तिगत छवि (तस्वीर) अपने में पूर्ण नहीं है। सम्पूर्ण रूप से ये छवि कलीसिया की एकता के लिये बहुत-सी चीजों को प्रकट करती है, जैसे कलीसिया का परमेश्वर के साथ संबंध, सदस्यों का एक दूसरे के साथ संबंध, और कलीसिया का सम्पूण रूप से समुदाय के साथ संबंध।

इस सप्ताह का पाठ कुछ तस्वीरों पर केंद्रित है और यह भी कि वे मसीह में एकता के बारे में हमें क्या दिखलाते हैं।

---

* सब्त, नवम्बर 10 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

रविवार **नवम्बर 4**

परमेश्वर के लोग

पढ़ें 1पत० 2:9; निर्ग० 19:5-6; व्यवस्था वि० 4:20; एवं व्यवस्था वि० 7:6. परमेश्वर के लोगों की विशेष हैसियत के विषय में ये पदस्थल क्या कहते हैं?

_____

_____

कलीसिया लोगों के विषय में है, लेकिन किसी भी प्रकार के लोगों के विषय में नहीं। कलीसिया परमेश्वर के लोग हैं, वे लोग जो परमेश्वर के हैं, जो परमेश्वर को अपना पिता और उद्धारकर्त्ता मानते हैं, और वे जो मसीह के द्वारा छुड़ाए गये हैं, और जो उसकी आज्ञाओं को मानते हैं। यह तसवीर इस धारणा को बल देती है कि उद्धार की योजना का इस पृथ्वी पर परिचय के पूर्व ही से परमेश्वर के लोग थे, और पुराने नियम में इस्राएल और नये नियम में कलीसिया के बीच उद्धार की योजना की निरंतरता है। आदम के समय से, बाढ़ से पूर्व और बाद में पूर्वज, और अब्राहम, परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ वाचा बांधी है ताकि वे उसके प्रेम, दया, और न्याय का प्रतिनिधित्व संसार के सामने कर सकें।

परमेश्वर के लोग "चुना हुआ वंश", "राजकीय याजक वर्ग" और एक पवित्र राष्ट्र" के नाम से पुकारे जाते हैं। ये शब्दावली संकेत देती हैं कि ये विशेष काम के निमित अलग किये हुए हैं:" इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो" (1पत० 2:9)। यह परमेश्वर के अनुग्रहकारी चरित्र के वर्णन की गूंज भी है, जिसका वर्णन निर्ग० 34:6) में किया गया है। "परमेश्वर ने कलीसिया को अपनी विशेष सम्पति के तौर पर प्राप्त कर लिया है ताकि इसके सदस्य अपने जीवन में उसके चरित्र के मूल्यवान गुणों को प्रतिबिबिंत कर सकें और उसकी भलाई और कृपा को सब लोगों के सामने प्रकट कर सकें।"– The SDA Bible Commentary, Vol. 7, P. 562.

पढ़ें व्यवस्था वि० 7:6-8. किस कारण परमेश्वर ने अब्राहम के वंशज को अपने लोगों के तौर पर चुना? यह क्यों आज भी लागू है ?

_____

_____

बेशक हम स्वयं से पूछ सकते हैं, कौन-सा राष्ट्र "पवित्र राष्ट्र" के नाम से पुकारे जाने के लायक है? कोई भी नहीं। सारे राष्ट्र और जातीय दल लोगों

से बना है जो परमेश्वर के अनुग्रह और प्रेम को पाने के लायक नहीं हैं। जौभी कि बाईबल हमें पवित्र लोग होने को बुलाती है पवित्र शास्त्र भी सिखाती है कि इस्राएल का चुनाव और स्थापन पूर्ण रूप से उसके प्रेम पर आधारित है न कि किसी उद्‌गुण पर जो मनुष्य को उसके सामने ला सके। परमेश्वर के लोगों की रचना प्रेममय सृष्टि का कार्य है– और पाप और वृहत् स्तर पर स्वधर्मत्याग के बावजूद– परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा अब्राहम के लिये की कि उसकी संतान के द्वारा मसीह अपने लोगों को बचायेगा। जिस प्रकार परमेश्वर के लोगों का चुनाव उसके अनुग्रह का कार्य था वैसा ही उनका उद्धार है। यह विषय परमेश्वर के अनुपयुक्त अनुग्रह में हमारी सामान्य जड़ों को हमें याद दिलाता है।

हमें क्यों हमेशा पवित्र सच्चाई को हमारे सामने रखनी चाहिये ताकि हमारा उद्धार जो मसीह ने हमारे लिये किया है उस पर स्थिर रहे न कि हमारे कार्य पर, जौभी कि हम "परमेश्वर के लोग हैं"?

सोमवार **नवम्बर 5**

परमेश्वर का परिवार

नये नियम में परमेश्वर के लोगों की दूसरी तसवीर परमेश्वर का घर या परिवार है। यह घरों और पत्थरों का रूपक है जो कलीसिया में मानव संबंध के स्वभाव की अंतरनिर्भरता एवं जटिलता को स्पष्ट करता है। पतरस मसीहियों को "जिन्दा पत्थर" के तौर पर प्रस्तुत करता है (1पत० 2:5)। यह रूपक स्थायित्व एवं दृढ़ता को समाहित करता है।

पढ़ें इफि० 2:19–22. पौलुस इस अवतरण में कौन–से मुख्य विचार पर जोर देता है? कलीसिया में एकता के विषय यह तसवीर हमें क्या बतलाती है?

_____

_____

इस अवतरण में पौलुस कलीसिया की दो तस्वीरों को जोड़ता है: एक निष्क्रिय, घर या इमारत; दूसरा सक्रिय (जीवित), लोगों का परिवार।

एक पत्थर का स्वयं में उतना अधिक मोल नहीं है, परन्तु जब यह दूसरे पत्थर के साथ बांध दिया जाता है, यह एक ढांचा बन जाता है जो जीवन की आंधियों को झेल सकता है। कोई भी मसीही अकेला पत्थर नहीं हो सकता है पर उसे परमेश्वर के परिवार की सहभागिता में दूसरों के साथ सहभागी होने की जरूरत है। एक भवन की दृढ़ता के लिये इसे मजबूत नींव की जरूरत होती

है। यीशु मसीह परमेश्वर के घर की नींव और "आधारशिला" है (देखें 1कुरि० 3: 11)। कलीसिया का कोई आस्तित्व नहीं हो सकता यदि इसने अपनी कार्यवाही में मसीह को आधारशिला नहीं बनाया। कलीसिया वाकई में यीशु मसीह के विषय में है: उसका जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान और पुनरागमन। कलीसिया विश्वासियों के समुदाय का निर्माण करती है जो संसार में यीशु के विषय सुसंवाद को प्रचार करने के लिये एकत्रित हैं। कलीसिया की कार्यसूची यीशु है: वह कौन है, उसने हमारे लिये क्या किया है और हम में क्या करता है और उसको क्या प्रदान करता है जो उसे उद्धारकर्ता प्रभु के तौर पर ग्रहण करेंगे।

परिवार की तसवीर भी बहुत अर्थपूर्ण है। यह लोगों के आपसी संबंध में स्थिर होता है। यह माता-पिता, भाई-बहन की परिचित तसवीर होती है। परिवार के सदस्यों के बीच बंधन मजबूत हो सकते हैं, और साथ देने वाली वफादारी अकसर सभी बाहरी बंधनों से श्रेष्ठ होती हैं। वफादारी एकता का एक वृहत्तर भाग होता है। वफादारी के बिना कोई एकता कैसे टिक सकती है?

यह तसवीर कलीसिया को कैसे संबद्ध करती है? कलीसिया के सदस्य एक विशाल परिवार के भाग होते हैं। हम जुड़े हुए हैं, इसलिए नहीं कि हमारा सबका पूर्वज आदम है वरन इसलिए कि हम हमारे नये जन्म के अनुभव के द्वारा दूसरा आदम मसीह से जुड़े हुए हैं। इस प्रकार हम सैद्धान्तिक सच्चाई के कारण ही एक साथ जुड़े नहीं हैं पर यीशु में एक नया जीवन का अनुभव करने के द्वारा जुड़े हुए हैं।

यह दु:खद बात है कि किसी ने भी अपने परिवार के साथ यह बड़ा अनुभव हासिल नहीं किया है। इसलिये वह तसवीर उनके लिये कोई मायने नहीं रखती है। एक कलीसिया के सदस्य के तौर पर हम कैसे परिवार हो सकते हैं जैसा कि इन लोगों के पास नहीं रहा?

मंगलवार **नवम्बर 6**

पवित्र आत्मा का मंदिर

पौलुस दूसरे भवन की तसवीर का इस्तेमाल करता है, वह है परमेश्वर या पवित्र आत्मा का मंदिर। यह कीमती और बहुमूल्य भवन की तसवीर है। 1कुरि० 6: 19 के साथ जहाँ पर तसवीर किसी के व्यक्तिगत शरीर को पवित्र आत्मा के मंदिर के तौर पर पेश करती है, पौलुस 1कुरि० 3:16-17 में तसवीर के प्राचीनतम पूर्व में के परमेश्वर के मंदिर के मूल्यवान और अति पवित्र भवन को संकेत करता है।

पढ़ें 1कुरि० 3: 16-17. इसका तात्पर्य क्या है कि कलीसिया पवित्र आत्मा का मंदिर है? पद 17 में वह किस विषय पर चेतावनी दे रहा है?

_____

_____

स्पष्ट रूप से, कलीसिया को दर्शाने में पौलुस के मन में एक सक्षात् मंदिर या परमेश्वर के रहने का स्थान की कल्पना नहीं थी। यूनानी नया-नियम "तुम" एकवचन और "तुम" बहुवचन में फर्क लाता है। यह रूपक समष्टिगत सत्ता को दिखलाता है: कुरिन्थ में मसीही एक साथ पवित्र आत्मा के मंदिर का गठन करते हैं, और आत्मिक अर्थ में परमेश्वर उनके बीच वास करता है।

पौलुस के लिये, परमेश्वर मसीही सहभागिता में वास करता है; इसलिए, उसकी चेतावनी कि कोई इस सहभागिता को नष्ट करने का प्रयास करता है वह न्याय के नतीजों का सामना करेगा। विश्वासियों की एकता इस सहभागिता और इस मंदिर में परमेश्वर की उपस्थिति के मध्य में है। यद्यपि यह विषय अकसर स्वयं के भौतिक शरीर की देखभाल के अर्थ में है, यह खास बिंदु नहीं है जिसका पौलुस यहाँ पर चर्चा कर रहा था। उसका संवाद उनके लिये एक चेतावनी था जो कलीसिया की एकता को नष्ट करते थे।

अध्याय के प्रारंभ में पौलुस ने उस बात का जिक्र किया जिसे वह एकता के लिये ललकार के तौर पर देखता है: "इसलिए कि जब तुम में डाह और झगड़ा है" (1कुरि० 3: 3)। ये प्रवृतियाँ और व्यवहार वास्तव में मसीही एकता के लिये खतरे हैं और परमेश्वर का अपने मंदिर में से उपस्थिति की वापसी का कारण होते हैं। दूसरे शब्दों में कलीसिया में संघर्ष परमेश्वर के मंदिर को नष्ट कर सकता है। अत: वह सदस्यों से चाहता है कि ऐसी प्रवृतियों और व्यवहारों को छोड़े जो एकता के लिए खतरा हैं।

जब कलीसिया में संघर्ष खड़े होते हैं, पौलुस की कुरिन्थियों को सलाह आज भी लागू होती है: "हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा विनती करता हूँ, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो" (1कुरि० 1: 10)।

डाह, झगड़ा, और विभाजन ये समस्याएँ हैं जिन्हें कलीसिया ने पौलुस के दिनों ही में सामना नहीं किया। आज हम भी इनका सामना करते हैं। इन समस्याओं के दौर में, हम में से प्रत्येक की भूमिका क्या होनी चाहिए कि हमारी एकता को खतरा न पहुँचे?

बुधवार **नवम्बर 7**

मसीह का शरीर

संभवत: कलीसिया का जाना-पहचाना चेहरा और वह जो इसके विभिन्न अंगों की एकता के विषय में मजबूती के साथ बात करता है मसीह का शरीर है। "क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है... इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो" (1कुरि० 12: 12,27)।

जिस प्रकार शरीर एक ईकाई है और भिन्न-भिन्न अंगों से बना है, हरेक के अपने काम और जिम्मेदारी हैं, यह मसीह के शरीर के रूप में कलीसिया है।

पढ़ें 1कुरि० 12: 12-26. किस प्रकार एक शरीर की यह तसवीर भिन्न-भिन्न अंगों के साथ आपकी स्थानीय सभा के साथ लागू होती है? किस प्रकार यह सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट कलीसिया के समान विश्वव्यापी संगठन के साथ लागू होता है?

_____

_____

1कुरि० 12 में पौलुस की शिक्षा प्रगाढ़ वास्तविकता को संप्रेषित करता है कि सच्ची मसीही एकता अनेकता में नहीं है, यह निश्चित रूप से अनेकता के बावजूद नहीं वरन अनेकता के बीच में है। हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि यह पवित्र आत्मा है जो अनेकता की इस अभिव्यक्ति का स्रोत है। जिस प्रकार मानव शरीर आश्चर्यजनक ढंग से और विचित्र रूप से भिन्न है वैसा ही आदर्श रूप में मसीह का शरीर है, जो इस विभिन्नता के द्वारा मसीह के शरीर की संपन्नता और पूर्णता को प्रकट करता है।

यह तसवीर प्रत्यक्ष रूप से एक कलीसिया के तौर पर हमसे बात करता है। विगत कुछ दशकों में सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट कलीसिया में बेतहाशा वृद्धि हुई है। सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट कलीसिया लगभग हरेक पृष्ठभूमि, संस्कृति, और परिवेश से बनी है। हमारी जातीयता, संस्कृति, शिक्षा, और उम्र की विभिन्नता-हमें मसीह में अलग नहीं करती है। यदि यह अनेकता पवित्र आत्मा द्वारा एकता के लिये सच्चाई को इन विभिन्नताओं के बावजूद प्रकट करने के द्वारा सांचे में ढाले तो हम सब मसीह में एक हैं।

जैसा हमने देखा है, क्रूस के पास हम सब बराबर हैं, इससे कोई फर्क नहीं कि हम कौन हैं कहाँ से आते हैं। जिस प्रकार हमारे चारों ओर संसार

अधिक से अधिक खंडित हो रहा है, कलीसिया को विभिन्नता में उस एकता का प्रदर्शन करना चाहिये। परमेश्वर के लोग सुसमाचार की चंगाई और मेल-मिलाप की शक्ति का प्रदर्शन कर सकते हैं।

आश्चर्यजनक ढंग से, पौलुस हमें बतलाता है कि किस प्रकार यह आदर्श प्राप्त किया जा सकता है। "मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है"। (इफि० 5:23); "और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है" (कुलु० 1:18)। जिस प्रकार प्रत्येक विश्वासी आत्मिक रूप से मसीह से जुड़ा हुआ है संपूर्ण शरीर उसी भोजन से पोषित होता है। हम तब परमेश्वर के वचन के अध्ययन की महत्ता पर अधिक बल नहीं दे सकते, जिस वचन में हम आज्ञाकारिता सीखते हैं, और मसीह के शरीर में एकता के लिये प्रार्थना एवं उपासना के सामान्य अनुभवों को सीख सकते हैं।

बृहस्पतिवार **नवम्बर 8**

भेड़ और गड़रिया

पढ़ें यूहन्ना 10:1-11. एक भेड़शाला के तौर पर कलीसिया का यह रूपक एकता के कौन-से पहलूओं की बात करता है? इसे भी देखें भजन० 23.

_____

_____

_____

विशाल शहरों के आधुनिक संसार में किसी भी प्रकार के जानवरों के रहने के स्थान देखना बहुत दुर्लभ है। बहुत से लोग भेड़ और गड़रियों के बीच संबंध को कम ही जानते हैं। फिर भी जब यीशु ने इन दृष्टान्त को बतलाया लोग उसे अच्छी रीति से समझ गये। जब उसने कहा, "मैं भला चरवाहा हूँ, उन्होंने भजन 23:1 के उसके विवरण को तुरंत समझा और उसकी प्रशंसा की "यहोवा मेरा चरवाहा है।" तसवीर स्पष्ट ही नहीं थी वरन् संवेदना से भरपूर थी जिसने इसे जीवंत बना दिया। प्राचीन पूर्व नजदीक संस्कृति, और मध्यपूर्व में अभी भी गड़रिये अपनी भेड़ों की देखभाल के लिये समर्पित जाने जाते हैं, इसमें उन्हें कितनी ही चुनौतियों का सामना क्यों न करना पड़े। गड़रिये की तसवीर प्रियत्तम तसवीरों में से एक हो गई है जो परमेश्वर और उसके लोगों के साथ उसके संबंध के चरित्र को वर्णन करने के लिये पवित्र शास्त्र में प्रयुक्त है।

परमेश्वर के लोगों की तसवीर भेड़ की तरह है जो एक दिलचस्प तसवीर है। एक प्रभाव जो हम अकसर भेड़ों में पाते हैं, वह है उनका हानिरहित एवं प्रतिकार रहित स्वभाव। इस प्रकार वे भले गड़रिये की सुरक्षा और निर्देशन में रहते हैं। वे बिलकुल मासूम लगते हैं। कभी-कभी वे खो जाते हैं और गड़रिया उन्हें ढूंढ़कर लाता और भेड़शाला में रख देता है। छोटे भेड़ों को अकसर गोद में उठाना पड़ता है और उन्हें अतिरिक्त परवाह (देखभाल) की जरूरत होती है। भेड़ों की देखभाल के लिये धैर्य और समझदारी की जरूरत होती है। भिन्न-भिन्न तरीके से, यह कलीसिया को वर्णन करने के लिये एक खूबसूरत तसवीर है। कलीसिया के सदस्यों को डरने की जरूरत नहीं परन्तु गड़रिया के साथ संबंध में सब कुछ प्राप्त होता है।

यीशु ने इस दृष्टान्त पर भी जोर दिया कि भेड़ों के लिये यह महत्त्व रखता है कि गड़रिये की आवाज को सुनें। जब परिस्थिति की मांग हो, यह संभव है कि भेड़ों के कुछ झुण्ड को उसी भेड़शाले में सुरक्षित रखा जा सकता है। बाद में वे किस प्रकार अलग किये जा सकते हैं? जरूरत है गड़रिये को द्वार पर खड़े होकर पुकारे। उसकी भेड़ें उसकी आवाज को पहचानेंगी और उसके पास आएँगी। "जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उनके आगे-आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे-पीछे हो लेती हैं, क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं" (यूहन्ना 10:4)। गड़रिये की आवाज सुनना कलीसिया के लिये निर्णायक है। वास्तव में परमेश्वर के लोगों की एकता और सुरक्षा उसके साथ उनकी निकटता पर निर्भर करता है और उसकी आवाज के प्रति उनकी समर्पित आज्ञाकारिता सीधे तौर पर संबंद्ध है।

लोग साधारणत: भेड़ की तरह वर्णन किया जाना पसंद नहीं करते हैं। तथापि, वह हमारे लिये क्यों एक उपयुक्त रूपक है? यह तसवीर गड़रिये की हमारी जरूरत और उसकी आवाज को हमें मानने की जरूरत के विषय में हमें क्या बतलाती है ?

शुक्रवार **नवम्बर 9**

अतिरिक्त अध्ययन: Ellen G . White, "The Divine Shepherd," PP. 476-484, in the Desire of Ages; "The Church on Earth", PP. 240-243, in Counsels for the Church.

"यरुशलेम में मंदिर के संदर्भ में तथा देशव्यापी ग्रीको-रोमन संरचनाएँ, नये नियम के लेखक विश्वासियों को कलीसिया की पवित्रता को समझने में मदद हेतु मंदिर के रूपक का इस्तेमाल करते हैं, कलीसिया के संगठन

एवं बढ़ोतरी में परमेश्वर की भूमिका, मसीह और आत्मा के काम का परिभाषित स्वभाव, और कलीसिया के अंदर विश्वासियों की एक जुटता। वास्तु कला का प्रभाव एक स्थिर तसवीर को संकेत करता है। रूपक का प्रयोग जैविक कल्पना और निर्माण प्रक्रिया के सहयोग से होता है। स्थिर तसवीर के अलावा 'हमें निर्मित भवन की बजाय निर्माण प्रक्रिया की कहानी को देखने हेतु प्रेरित किया जाता है।' कलीसिया को विशेष अवसर दिया गया है कि इसके जीवन और कहानी को नम्रतापूर्वक स्वीकार करे 'जीवता परमेश्वर का मंदिर' (2कुरि० 6:16)"– John McVay, "Biblical Metophors for the Church: Building— Blocks for Ecclesiology," in Angel Manuel Rodrignez, ed., Message, Mission, and Unity of the Church (Hagerstown, Md.: Review and Herald, 2013), P. 52.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्नः

1. कलीसिया की बाईबलीय तसवीरों पर विचार करें। आप किसे अधिक पसंद करते हैं? आप क्यों उस पर अधिक फिदा हैं। कलीसिया के कुछ और रूपक इन पदस्थलों में पाये जाते हैं: 1तीमु० 3:15, 2 तीमु० 2:3-5, 1पत० 2:9. कलीसिया के विषय में ये रूपक और क्या सिखलाते हैं ?

2. परमेश्वर अपने लोगों को मसीही सहभागिता के नजदीकी बंधन में जुड़ा होना चाहता है; हमारे भाइयों में आत्मविश्वास कलीसिया की उन्नति के लिये आवश्यक है; धार्मिक संकटों में कार्रवाई की एकता महत्त्वपूर्ण है। एक ढीठाई पूर्ण कदम, एक लापरवाही कार्य, कलीसिया को मुश्किल में डाल सकता है और यह परीक्षाओं से वर्षों तक उबर नहीं सकती है।"– Ellen G. White, Tetimonies for the Church, Vol. 3, P. 446. कलीसिया की एकता की सुरक्षा के लिये सतर्क होने के विषय में यह चेतावनी हमें क्या सिखलाती है? इस पवित्र जिम्मेदारी में हम प्रत्येक की क्या भूमिका है ?

3. रविवार का पाठ बल देता है कि "परमेश्वर के लोग" होकर भी हमें उद्धार के लिये केवल परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा करना चाहिए, और हमारे स्वयं के सद्गुण पर कभी नहीं। क्या आपने कभी तर्क किया है कि उद्धार के लिये परमेश्वर के सद्गुण पर हमारा पूर्ण

भरोसा होना चाहिए जो सचमुच में हमें "परमेश्वर के लोग" बनाता है? क्यों और क्यों नहीं यह एक वैध दावा हो सकता है ?

साराँश :- नया नियम कलीसिया के स्वभाव और कार्य को बतलाने के लिये भिन्न-भिन्न रूपकों का प्रयोग करता है। अधिक महत्त्वपूर्ण, ये रूपक सिखलाते हैं कि परमेश्वर ध्यान पूर्वक अपने लोगों को देख रहा है और उन्हें सुरक्षा देता है। ये तसवीर यह भी सिखलाते हैं कि परमेश्वर के लोग जटिलता के साथ एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं और इसलिये हम प्रत्येक को कार्य करने की जरूरत है जिस काम के लिये हम बुलाये गये हैं।